Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 6, July 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

आपका बंटी – एक सामाजिक समस्या

प्राजक्ता प्रकाश जोशी

हिंदी विभाग प्रमुख,
ए. आर. बुर्ला महिला वरिष्ठ महाविद्यालय, सोलापुर.
prajaktajoshi.joshi6@gmail.com

प्रस्तावना :–
आज नारी का क्षेत्र सीमित न रहकर व्यापक बन गया है। पुरुषो के बराबरी का अधिकार पाकर आज हर क्षेत्र में वह अग्रेसर है। पढ़ – लिखकर आर्थिक रुप से स्वावलंबी बनी, अपने अधिकार, अस्मिता के प्रति सतर्क होकर उसने अपनी एक अलग पहचान प्राप्त की है। हर क्षेत्र को काबीज करनेवाली यह नारी भला साहित्य के क्षेत्र से कैसे अलग रहती। पहले साहित्य के क्षेत्र में जहाँ केवल पुरुषों का ही अधिकार माना जाता था, कुछ गिनी – चुनी महिलाओं के ही नाम साहित्य के क्षेत्र से जुड़े हुए थे। वहाँ स्वातंत्र्योत्तर काल में एकसाथ कई महिला लेखिकाओं का आगमन यह हिंदी साहित्य की एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। उषा प्रियवंदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, दिप्ती खंडेलवाल, ममता कालिया, मालती जोशी ऐसी अनेक महिला लेखिकाएं रही जिन्होंने कहानियों के साथ उपन्यास लिखकर हिंदी कथा–साहित्य को समृध्द बनाया है।

नारी होने के नाते नारी मनोविज्ञान का सफल चित्रण इन लेखिकाओ ने अपनी रचनाओ में किया है। उसकी समस्या, मानसिक द्वंद्वका यथार्थ रुप में चित्रण किया है। एक और लक्षणीय बात यह है कि अधिकांक्ष लेखिकाएं कामकाजी होने के कारण उन्होंने कामकाजी नारी का चित्रण विशेष रुप से किया है। मन्नू भंडारी एक ऐसी ही लेखिका रही है जिन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक और आत्मकथा लिखकर साहित्य जगत में अपनी अलग–सी पहचान बनायी है। 'एक प्लेट सैलाव' 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है' 'त्रिशंकु' 'श्रेष्ठ कहानियाँ', 'आँखों देखा झूठ' आदि उनके प्रकाशित कहानी–संग्रह है। इसके अलावा 'महाभोज' 'आपका बंटी', 'स्वामी', 'एक इंच मुस्कान' (पति राजेंद्र यादव के साथ) और 'कलवा' उनके प्रसिध्द उपन्यास है। 'बिना दिवारों के घर यह उनका नाटक है। 'एक कहानी यह भी' नामक उनकी आत्मकथा भी प्रकाशित हुई है।

मन्नू भंडारी के उन बेजोड़ उपन्यासों में से एक है 'आपका बंटी'। जिसका प्रथम संस्करण 1971 में राधाकृश्ण प्रकाशन दिल्ली के द्वारा हुआ है। माना जाता है कि यह मन्नू भंडारी का सर्वप्रथम स्वतंत्र उपन्यास है और साथ ही हिंदी का यह पहला उपन्यास है जिसमें बालमनोविज्ञान का इतना विस्तृत वर्णन मिलता है। कुल 208 पृष्ठों वाला यह उपन्यास 16 भागों में विभाजित है। पूरा उपन्यास 'बंटी' पर केंद्रीत है। उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक अरुप बत्रा ऊर्फ बंटी का चरित्र ही छाया रहता है। उपन्यास में बंटी की ममी शकुन, पापा अजय, वकील चाचा, फूफी डॉक्टर जोशी, मीरा जोत, अमि, चीनू आदि पात्रों के साथ, हीरालाल, माली, टीटू, टीटू की अम्मा, पिता, शन्नो, बहादुर आदि पात्र भी उभरकर आये है।

उपन्यास का प्रमुख पात्र बंटी सात–आठ वर्ष का नन्हा – सा बालक है। बंटी के पापा अजय और ममी शकुन दोनों उच्चशिक्षित, आधुनिक स्वतंत्र विचार वाले, वैचारिक असामंजस्य के कारण दोनों में तनाव की स्थिती उत्पन्न होती है। आपस में समझौता न कर पाने की स्थिति में दोनों एक–दूसरे से अलग हो जाते है। शकुन बेटे बंटी के साथ दिल्ली में अकेले रहती है। इन सात सालों में वह कॉलेज में विभागध्यक्ष से प्रिंसिपल जैसे जिम्मेदार पद को संभाल रही है। अजय भी डिविजिनल मैनेजर जैसे उच्चपद पर कार्यरत है। अजय बंटी को मिलने अक्सर कलकत्ते से आया करता है। आनेपर दिनभर वह उसे घुमाता, खिलाता, खिलौने दिलाता। शकुन बंटी को सेतू के रुप में देखती है जो अजय और उसकी दूरी को मिटा देगा इसलिए बंटी से मिलने से कभी वह मना नहीं करती पर अहंभाव ग्रस्त दोनों एक–दूसरे से मिलते नहीं है।

शकुन बंटी से बेहद प्यार करती है। 'प्रिंसीपल ममी जितनी सख्त है, बंटी की ममी के रुप में उतनी ही कोमल इस प्रकार एक ही व्यक्ति में दो व्यक्तियों का यह विभाजन कितना वास्तविक और आधुनिक है।'[1] बंटी पूरी तरह अपनी ममी शकुन पर निर्भर है। वह ममी से दूर नहीं रह सकता। अजय बंटी को अपने साथ कलकत्ता चलने की बात कहने पर कहता 'ममी चलेंगी तो चलूँगा।'[2] वह तो चाहता है कि ममी पापा दोनों साथ रहे।

Please cite this Article as : *प्राजक्ता प्रकाश जोशी* , *आपका बंटी – एक सामाजिक समस्या* : Indian Streams Research Journal (July ; 2012)

अजय के मित्र वकील चाचा से शकुन को पता चलता है कि मीरा के साथ नई जिंदगी शुरू कर चुका अजय तलाक चाहता है। बिना किसी तक्रार के पेपर पर दस्तखत कर चुकी शकुन अनुभव करती है कि एकबार फिर वह अजय द्वारा छली, बेवकूफ बनायी गई है। 'शकुन बंटी का न तो हथियार के रुप में ही उपयोग कर सकी और न वह उसे 'टार्चर' कर सकी। बंटी को वह सेतु के रुप में भी देखती है। जो अजय और उसकी दूरी को मिटा देगा परंतू बंटी सेतु भी नहीं बन पाता।[3] अजय मीरा के साथ अपनी नई जिंदगी शुरु कर सकता है तो क्या वह नहीं यह दिखाने के लिए वह शहर के नामी डॉक्टर जोशी से विवाह करती है।

आकर्षक और सुलझे व्यक्तित्ववाले विधुर डॉक्टर जोशी के बच्चे अमि और जोत शकुन को माँ के रुप में स्वीकारते है लेकिन बंटी डॉक्टर जोशी को पापा के रुप में स्वीकार नहीं पाता। ममी समवेत डॉक्टर जोशी के कोठी में रह रहा बंटी स्वंय को नितांत अकेला, उपेक्षित समझने लगता है। कोठी में डॉक्टर जोशी के डिस्पेसरी पर लगा 'बस दो बच्चे' का बोर्ड उसे बार–बार आकर्शित करता है। वह स्वंय को 'तिसरा बच्चा फालतू बच्चा – तीसरा बंटी, फालतू बंटी'4 अनुभव करता है। सच बात तो यह है कि ममी पर अपना एकाधिकार समझनेवाला बंटी डॉक्टर जोशी को उनके साथ देखकर उसके मन में आक्रोश और हीनभावना उत्पन्न होती है। ममी की दूरी में बंटी बिखरता है तो डॉक्टर जोशी व अमि के प्रति ममी का लगाव देखकर ईर्ष्या करने लगता है और वही कार्य करने लगता है जिससे ममी को दुःख पहुँचे, ममी का अपमान करके शकुन के समझाने पर भी वह डॉक्टर जोशी को पापा नहीं कहता। उसका बदला हुआ व्यवहार देखकर ममी हमेशा चिंतित रहती है डॉक्टर जोशी बंटी को प्रॉब्लम बच्चा बतलाते हुए शकुन को संतुलित रहने की सलाह देते है।

बंटी के कारण शकुन डॉक्टर जोशी को खोना नहीं चाहती। 'बंटी को दरार ही बनना है तो मीरा और अजय के बीच में बने। अजय भी तो जाने कि बच्चे को लेकर किस तरह ही यातना से गुजरना होता है ... कि पुरानी स्लेट इतनी जल्दी और इतनी आसानी से साफ नहीं होती .... ।[5] बंटी भी अपने पापा को नहीं भूल पाया है। छुप –छुप कर वह पापा को पत्र लिखता है। शकुन पत्रों को पढ़कर उसके बदले तेवर, मानसिकता को देखते उसे अजय के पास कलकत्ता भेजने का निर्णय लेती हैं। बंटी को लगता है ममी उसे कलकत्ता जाने से रोकेगी। पर ऐसा कुछ नहीं होता उल्टा ममी उसके जाने की तैयारी करती है। उसके लिए मनचाही चीजें खरीदकर लाती है जिसे बंटी स्विकारता नहीं है। ममी हो दुखी करने के लिए पापा के पास जाने की जिद्द बंटी को बहुत तकलीफ पहुँचती है परन्तु वह जाकर ही मानता है। यहां आने पर भी वह स्वयं को अकेला ही पाता है। अजय के समझाने पर वह मीरा को ममी के रुप में स्वीकार नहीं कर पाता। शकुन की उसे बहुत याद आती है। 'इस प्रकार बंटी अपनी क्रियाओं से अपनी ममी को ही दुःख नहीं देता बल्कि स्वयं भी एक आन्तरिक यन्त्रणा से गुजरता है। इस कारण कहा जा सकता है कि 'बंटी' अतिरिक्त संवेदनशील होने के कारण 'एबनार्मल' है।[6]

पापा उसे होस्टेल भेजने की व्यवस्था करते है। ममी से तो वह पहले ही कट चुका होता है और यहाँ आकर वह पापा से भी कट जायेगा। वह एकदम अकेला हो जाता है। 'निःसन्देह उपन्यास में उठायी गयी समस्या टूटते वैवाहिक सम्बधों में संवेदनशील बच्चे की दयनीय स्थिति – एक विशिष्ट समस्या है जिसे हिंदी में शायद पहली बार उठाया गया।'[7]

मन्नू भंडारी ने बंटी के माध्यम से बालमन का यथार्थ रुप में चित्रण किया है। अहंग्रस्त पति–पत्नि के बीच बंटी जैसे निरीह, निश्पाप, निर्दोश बालक की स्थिति बड़ी शोचनीय बन रही है। वास्तव में बालक का समुचित विकास उसके माता–पिता दोनों के सामंजस्य से ही होता है। जब कि बंटी अपने ममी पापा के अलग हो जाने की पीड़ा को स्वयं सबसे ज्यादा भोग रहा है। आज यह अकेले बंटी की स्थिति नहीं है। समाज में ऐसे कई बंटी है जो ममी पापा द्वारा की गयी गलती की सजा को भोगते एकाकी जीवन जीने के लिए बाध्य हो रहे है। लेखिकाने लगभग चालीस वर्ष पहली उठायी गयी यह समस्या आज भी समाज में ज्यों की त्यों पायी जा रही है। यह समस्या किसी एक परिवार से संबंधित न होकर सामाजिक बन गयी है। इस प्रकार इसे हम एक कालजयी सामाजिक 'समस्या' के रुप में देख सकते है।

संदर्भ ग्रंथ :

1.डॉ. वंशीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र : मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, पृ. 18
2.मन्नू भंडारी : आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 53
3.डॉ. ममता शुक्ला : मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा पृ. 55
4.मन्नू भंडारी : आपका बंटी पृ. 149
5.वही पृ. 114
6.डॉ. ममता शुल्का : मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन पृ. 234
7.हेमचन्द्र जैन, समीक्षा संपादक गोपालराय 1971 पृ. 5